Nafl Rozon Ke Fazaail (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 284
Weekly Booklet : 284

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "फ़ैज़ाने रमज़ान" की
एक क़िस्त बनाम

नफ़्ल रोज़ों के फ़ज़ाइल

सफ़हात 24

रोज़ादारों के लिये बख़्शिश की बिशारत	02	नफ़्ली रोज़ों के फ़ज़ाइल पर 13 फ़रामीने मुस्तफ़ा	03
सख़्त गर्मी में रोज़े की फ़ज़ीलत	09	नफ़्ल रोज़े के 13 मदनी फूल	20

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलात
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ ط
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افۡتَحۡ عَلَيۡنَا حِكۡمَتَكَ وَانۡشُرۡ
عَلَيۡنَا رَحۡمَتَكَ يَا ذَاالۡجَلَالِ وَالۡاِكۡرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला	:	**नफ़्ल रोज़ों के फ़ज़ाइल**
सिने त़बाअ़त	:	रजबुल मुरज्जब **1444** हि., जनवरी **2023** ई.
ता'दाद	:	0000
नाशिर	:	**मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

नफ़्ल रोज़ों के फ़ज़ाइल

येह रिसाला (**नफ़्ल रोज़ों के फ़ज़ाइल**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद 1, गुजरात।

MO. 9898732611 • Email :hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج۵۱ ص۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

(येह मज़्मून किताब "फ़ैज़ाने रमज़ान" सफ़ह़ा 320 ता 327 से और 365 ता 377 लिया गया है।)

नफ़्ल रोज़ों के फ़ज़ाइल

दुआए अ़त्तार : **या अल्लाह** पाक ! जो कोई 22 सफ़ह़ात का रिसाला : "**नफ़्ल रोज़ों के फ़ज़ाइल**" पढ़ या सुन ले उसे और उस की औलाद को अपने प्यारे सब से आख़िरी नबी (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के आलो असह़ाब की सच्ची मह़ब्बत और बे ह़िसाब मग़्फ़िरत से मुशर्रफ़ फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : क़ियामत के रोज़ **अल्लाह** पाक के अ़र्श के सिवा कोई साया नहीं होगा, तीन शख़्स अ़र्शे इलाही के साए में होंगे। अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन लोग होंगे ? इर्शाद फ़रमाया : ﴿1﴾ वोह शख़्स जो मेरे उम्मती की परेशानी दूर करे ﴿2﴾ मेरी **सुन्नत** ज़िन्दा करने वाला ﴿3﴾ मुझ पर कसरत से **दुरूद शरीफ़** पढ़ने वाला। (البدور السافرۃ، ص131، حدیث:366)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

नफ़्ल रोज़ों के दीनी व दुन्यवी फ़वाइद

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़र्ज़ रोज़ों के इलावा **नफ़्ल रोज़ों**

की भी आ़दत बनानी चाहिये कि इस में बे शुमार दीनी व दुन्यवी फ़वाइद हैं और सवाब तो इतना है कि मत पूछो बात ! आदमी का जी चाहे कि बस रोज़े रखते ही चले जाएं। **दीनी फ़वाइद** में ईमान की हिफ़ाज़त, जहन्नम से नजात और जन्नत का हुसूल शामिल हैं और जहां तक दुन्यवी फ़वाइद का तअ़ल्लुक़ है तो दिन के अन्दर खाने पीने में सर्फ़ होने वाले वक़्त और अख़्राजात की बचत, पेट की इस्लाह़ और बहुत सारे अमराज़ से हिफ़ाज़त का सामान है। और तमाम फ़वाइद की अस्ल येह है कि रोज़ेदार से **अल्लाह** पाक राज़ी होता है।

रोज़ादारों के लिये बख़्शिश की बिशारत

अल्लाह पाक पारह 22 **सूरतुल अह़्ज़ाब** की आयत नम्बर 35 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَ الصَّآىِٕمِیْنَ وَ الصَّآىِٕمٰتِ وَ الْحٰفِظِیْنَ فُرُوْجَهُمْ وَ الْحٰفِظٰتِ وَ الذّٰكِرِیْنَ اللّٰهَ كَثِیْرًا وَّ الذّٰكِرٰتِۙ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّ اَجْرًا عَظِیْمًا۝۳۵ (پ22، الاحزاب:35)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और रोज़े वाले और रोज़े वालियां और अपनी पारसाई निगाह रखने वाले और निगाह रखने वालियां और **अल्लाह** को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियां इन सब के लिये **अल्लाह** ने बख़्शिश और बड़ा सवाब तय्यार कर रखा है।

وَ الصَّآىِٕمِیْنَ وَ الصَّآىِٕمٰتِ (**तरजमा :** और रोज़े वाले और रोज़े वालियां) की तफ़्सीर में ह़ज़रते अ़ल्लामा अबुल बरकात **अ़ब्दुल्लाह** बिन अह़मद नसफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : इस में फ़र्ज़ और नफ़्ल दोनों क़िस्म के रोज़े दाख़िल हैं। मन्क़ूल है : जिस ने हर महीने अय्यामे बीज़ (या'नी चांद की

13, 14, 15 तारीख़) के तीन रोज़े रखे वोह रोज़े रखने वालों में शुमार किया जाता है। (تفسیر مدارک، 2/345)

अल्लाह पाक पारह 29 **सूरतुल ह़ाक़्क़ह** की आयत नम्बर 24 में इर्शाद फ़रमाता है :

﴿كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔۢا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** खाओ और पियो रचता हुवा सिला उस का जो तुम ने गुज़रे दिनों में आगे भेजा।

ह़ज़रते शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه आयते करीमा के इस ह़िस्से : (गुज़रे हुए दिनों में) के तह़्त लिखते हैं : या'नी दुन्या के दिनों में से गुज़श्ता दिनों में या उन दिनों में जो कि खाने और पीने से ख़ाली थे और वोह **रमज़ानुल मुबारक** के रोज़ों के दिन हैं और दूसरे मस्नून रोज़ों के अय्याम जैसे अय्यामे बीज़ (या'नी चांद की 13, 14, 15 तारीख़), अ़रफ़ा (या'नी 9 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम) का दिन, रोज़े आ़शूरा, पीर का दिन, जुमे'रात का दिन और शबे बराअत का दिन वग़ैरा। (تفسیر عزیزی، 2/103)

ह़ज़रते इमाम मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ (गुज़रे हुए दिनों में) से मुराद रोज़ों के दिन हैं अब मत़लब येह हुवा कि तुम खाओ और पियो उस के बदले में जो तुम ने रोज़े के दिनों में **अल्लाह पाक** की रिज़ा में ख़ुद को खाने पीने से रोका। (लिहाज़ा जन्नत में खाना पीना दुन्या में खाने पीने से रुकने का बदल हो जाएगा) (تفسیر روح البیان، 7/143)

"माहे रमज़ान मुबारक" के तेरह ह़ुरूफ़ की निस्बत से नफ़्ली रोज़ों के फ़ज़ाइल पर 13 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴿1﴾ जन्नत का अनोखा दरख़्त

जिस ने **एक नफ़्ल रोज़ा** रखा उस के लिये **जन्नत** में एक दरख़्त लगा दिया जाएगा जिस का फल **अनार** से छोटा और **सेब** से बड़ा होगा, वोह

शहद जैसा मीठा और ख़ुश ज़ाएक़ा होगा, **अल्लाह** पाक बरोज़े क़ियामत रोज़ादार को उस दरख़्त का फल खिलाएगा। (معجم کبیر، 18/366، حدیث:935)

﴾2﴿ 40 साल का फ़ासिला दोज़ख़ से दूरी

जिस ने सवाब की उम्मीद रखते हुए **एक नफ़्ल रोज़ा** रखा **अल्लाह** पाक उसे दोज़ख़ से **चालीस साल** (की मसाफ़त के बराबर) दूर फ़रमा देगा।

(جمع الجوامع، 7/190، حدیث:22251)

﴾3﴿ दोज़ख़ से 50 साल की मसाफ़त तक दूरी

जिस ने रिज़ाए इलाही के लिये एक दिन का **नफ़्ल रोज़ा** रखा तो **अल्लाह** पाक उस के और दोज़ख़ के दरमियान एक तेज़ रफ़्तार सुवार की पचास सालह मसाफ़त (या'नी फ़ासिले) तक दूर फ़रमा देगा।

(کنز العمال، 8/255، حدیث:24149)

﴾4﴿ ज़मीन भर सोने से भी ज़ियादा सवाब

अगर किसी ने **एक दिन नफ़्ल रोज़ा** रखा और **ज़मीन भर सोना** उसे दिया जाए जब भी इस का सवाब पूरा न होगा, इस का सवाब तो क़ियामत ही के दिन मिलेगा। (ابو یعلیٰ، 5/253، حدیث:6104)

﴾5﴿ जहन्नम से बहुत ज़ियादा दूरी

जिस ने **अल्लाह** पाक की राह में एक दिन का फ़र्ज़ रोज़ा रखा, **अल्लाह** पाक उसे जहन्नम से इतना दूर कर देगा जितना सातों ज़मीनों और आस्मानों के माबैन (या'नी दरमियान) फ़ासिला है। और जिस ने एक दिन का नफ़्ल रोज़ा रखा **अल्लाह** पाक उसे जहन्नम से इतना दूर कर देगा जितना ज़मीन व आस्मान का दरमियानी फ़ासिला है। (مجمع الزوائد، 3/445، حدیث:5177)

﴾6﴿ कव्वा बचपन ता बुढ़ापा उड़ता रहे यहां तक कि.....

जिस ने एक दिन का रोज़ा **अल्लाह** पाक की रिज़ा हासिल करने के लिये रखा, **अल्लाह** पाक उसे जहन्नम से इतना दूर कर देगा जितना कि एक **कव्वा** जो अपने बचपन से उड़ना शुरूअ करे यहां तक कि बूढ़ा हो कर मर जाए। (ابویعلیٰ،1/383،حدیث:9147)

﴾7﴿ रोज़े जैसा कोई अ़मल नहीं

हज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे ऐसा अ़मल बताइये जिस के सबब जन्नत में दाख़िल हो जाऊं।" फ़रमाया : "रोज़े को ख़ुद पर लाज़िम कर लो क्यूं कि इस की मिस्ल कोई अ़मल नहीं।" रावी कहते हैं : "हज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के घर दिन के वक़्त मेहमान की आमद के इलावा कभी धूआं न देखा गया (या'नी आप दिन को खाना खाते ही न थे रोज़ा रखते थे)।"

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان،5/179،حدیث:3416)

﴾8﴿ रोज़ा रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे

صُوْمُوْا تَصِحُّوا या'नी रोज़ा रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे।

(معجم اوسط،6/146،حدیث:8312)

﴾9﴿ महशर में रोज़ादारों के मज़े

क़ियामत के दिन जब रोज़ेदार क़ब्रों से निकलेंगे तो वोह रोज़े की बू से पहचाने जाएंगे, उन के लिये दस्तर ख़्वान लगाया जाएगा और उन्हें कहा जाएगा : "खाओ ! कल तुम भूके थे, पियो ! कल तुम प्यासे थे, आराम करो ! कल तुम थके हुए थे।" पस वोह खाएंगे पियेंगे और आराम करेंगे हालां कि लोग हिसाब की मशक़्क़त और प्यास में मुब्तला होंगे। (جمع الجوامع،2/334،حدیث:2462)

﴾10﴿.....तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा

जो ''لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه''कहते हुए इन्तिक़ाल कर गया तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा। और जिस ने किसी दिन **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये **रोज़ा** रखा, इसी पर उस का ख़ातिमा हुवा तो वोह दाख़िले जन्नत होगा। और जिस ने **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये **सदक़ा** किया, इसी पर उस का ख़ातिमा हुवा तो वोह दाख़िले जन्नत होगा। (مسند امام احمد، 9/90، حدیث:23384)

﴾11﴿ जब तक रोज़ेदार के सामने खाना खाया जाता है

हज़रते उम्मे उ़मारा बिन्ते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا फ़रमाती हैं : सुल्ताने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे यहां तशरीफ़ लाए, मैं ने खाना पेश किया तो इर्शाद फ़रमाया : ''तुम भी खाओ!'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''मैं रोज़े से हूं।'' तो फ़रमाया : ''जब तक रोज़ेदार के सामने खाना खाया जाता है फ़िरिश्ते उस रोज़ादार के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करते रहते हैं।'' (ترمذی، 2/205، حدیث:785)

﴾12﴿ हड्डियां तस्बीह़ करती हैं

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ बिलाल! (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ) आओ नाश्ता करें।'' तो (ह़ज़रते) बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने अ़र्ज़ की : ''मैं रोज़े से हूं।'' तो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''हम अपना रिज़्क़ खा रहे हैं और बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ) का रिज़्क़ जन्नत में बढ़ रहा है।'' फिर फ़रमाया : ''ऐ बिलाल! क्या तुम्हें मा'लूम है कि जितनी देर तक रोज़ादार के सामने कुछ खाया जाए तब तक उस की हड्डियां तस्बीह़ करती हैं, उसे फ़िरिश्ते दुआ़एं देते हैं।''

(ابن ماجہ، 2/348، حدیث:1749)

﴾13﴿ रोज़े में मरने की फ़ज़ीलत

"**जो** रोज़े की ह़ालत में मरा, **अल्लाह** पाक क़ियामत तक के लिये उस के ह़िसाब में रोज़े लिख देगा।" (الفردوس بماثور الخطاب، 3/504، حدیث:5557)

नेक काम के दौरान मरने की सआ़दत

ख़ुश नसीब है वोह मुसल्मान जिसे रोज़े की ह़ालत में मौत आए बल्कि किसी भी नेक काम के दौरान मौत आना अच्छी बात है। मसलन बा वुज़ू या दौराने **नमाज़** मरना, **सफ़रे मदीना** के दौरान रूह़ क़ब्ज़ होना, दौराने ह़ज मक्कए मुकर्रमा, मिना, मुज़्दलिफ़ा या अ़रफ़ात शरीफ़ में इन्तिक़ाल, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे **मदनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरे सफ़र के दौरान दुन्या से रुख़्सत होना, येह सब अ़ज़ीम सआ़दतें हैं जो कि सिर्फ़ ख़ुश नसीबों को ह़ासिल होती हैं। इस सिल्सिले में सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की नेक तमन्नाएं बयान करते हुए ह़ज़रते ख़ैसमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : "सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इस बात को पसन्द करते थे कि किसी अच्छे काम मसलन ह़ज, उ़म्रह, रमज़ान के रोज़े वग़ैरा के दौरान मौत आए।" (حلیۃ الاولیاء، 4/123)

कालू चाचा की ईमान अफ़रोज़ वफ़ात

नेक काम के दौरान मौत से हमआग़ोश होने की सआ़दत सिर्फ़ मुक़द्दर वालों का ह़िस्सा है। इस ज़िम्न में आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के इज्तिमाई सुन्नते ए'तिकाफ़ की एक **मदनी बहार** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये और ज़िन्दगी भर के लिये दा'वते इस्लामी के **दीनी माह़ोल** से वाबस्ता रहने का अ़ज़्मे मुसम्मम कर लीजिये। मदीनतुल औलिया **अह़मदआबाद** शरीफ़ (गुजरात, अल हिन्द) के **कालू चाचा** (उ़म्र

तक़रीबन 60 बरस) **रमज़ानुल मुबारक** (1425 हि., 2004 ई) के आख़िरी अ़शरे में शाही मस्जिद (शाहे आ़लम, अह़मदआबाद शरीफ़) में **मो'तकिफ़** हो गए। यूं तो येह पहले ही से मदनी माह़ोल से वाबस्ता थे मगर **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ ए'तिकाफ़ पहली ही बार किया था। **ए'तिकाफ़** में बहुत कुछ सीखने का मौक़अ़ मिला और साथ ही साथ **''72 नेक आ'माल''** में से **पहली सफ़ में नमाज़** पढ़ने की तरग़ीब वाले दूसरे **''नेक अ़मल''** पर अ़मल का ख़ूब जज़्बा मिला। 2 शव्वालुल मुकर्रम या'नी **ईदुल फ़ित्र** के दूसरे रोज़, सुन्नतों भरे तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र किया। **मदनी क़ाफ़िले** से वापसी के पांच या छे दिन बा'द या'नी 11 शव्वालुल मुकर्रम 1425 हि., 24 नवम्बर 2004 ई. को किसी काम से बाज़ार जाना हुवा, गो मसरूफ़िय्यत थी मगर ताख़ीर की सूरत में **पहली सफ़** फ़ौत होने का ख़दशा था, लिहाज़ा सारा काम छोड़ कर मस्जिद का रुख़ किया और अज़ान से क़ब्ल ही **मस्जिद** में पहुंच गए, वुज़ू कर के जूं ही खड़े हुए फ़ौरन गिर पड़े, **कलिमा शरीफ़** और **दुरूदे पाक** पढ़ते हुए उन की रूह क़फ़्से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई, اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ। سُبْحٰنَ اللّٰه ! जिस को मरते वक़्त **कलिमा शरीफ़** पढ़ने की सआ़दत नसीब हो जाए اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم उस का **क़ब्रो ह़श्र** में बेड़ा पार है। चुनान्चे नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, मालिके जन्नत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : **''जिस का आख़िरी कलाम لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه हो, वोह दाख़िले जन्नत होगा।''** (ابوداود، 3/255، حدیث:3116)

मज़ीद दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल की बरकत सुनिये : इन्तिक़ाल के चन्द रोज़ बा'द उन के फ़रज़न्द ने ख़्वाब में देखा कि **वालिदे**

मर्हूम सफ़ेद लिबास में मल्बूस सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाए मुस्कुराते हुए फ़रमा रहे हैं : **बेटा ! दा'वते इस्लामी के दीनी कामों में लगे रहो कि इसी मदनी माहोल की बरकत से मुझ पर करम हुवा है।**

मौत फ़ज़्ले ख़ुदा से हो ईमान पर, मदनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
रब की रह़मत से जन्नत में पाओगे घर, मदनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 640)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सख़्त गर्मी में रोज़े की फ़ज़ीलत (हिकायत)

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को एक समुन्दरी जिहाद में भेजा। एक अंधेरी रात में जब कश्ती के बादबान उठा दिये गए तो हातिफ़े ग़ैब ने पुकारा : "ऐ सफ़ीने वालो ! ठहरो ! क्या मैं तुम्हें न बताऊं कि **अल्लाह** पाक ने अपने ज़िम्मए करम पर क्या लिया है ?" ह़ज़रते अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : "अगर तुम बता सकते हो तो ज़रूर बताओ।" उस ने कहा : "**अल्लाह** पाक ने अपने ज़िम्मए करम पर ले लिया है कि जो शदीद गरमी के दिन अपने आप को **अल्लाह** पाक के लिये प्यासा रखे **अल्लाह** पाक उसे सख़्त प्यास वाले दिन (या'नी क़ियामत में) सैराब करेगा।" रावी फ़रमाते हैं : ह़ज़रते अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की आ़दत थी कि सख़्त गरमी के दिन रोज़ा रखते थे।

(الترغیب والترہیب، 2/51، حدیث:18)

क़ियामत में रोज़ादार खाएंगे

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन रबाह़ अन्सारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ

फ़रमाते हैं, मैं ने एक राहिब से सुना : "क़ियामत के दिन दस्तर ख़्वान बिछाए जाएंगे, सब से पहले रोज़ेदार उन पर से खाएंगे।" (ابن عساکر، 5/534)

अय्यामे बीज़ के रोज़े

हर मदनी माह (या'नी सिने हिजरी के महीने) में कम अज़ कम तीन 3 रोज़े हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन को रख ही लेने चाहिएं। इस के बे शुमार दुन्यवी और उख़्रवी फ़वाइद हैं। बेहतर येह है कि येह रोज़े "अय्यामे बीज़" या'नी चांद की 13, 14 और 15 तारीख़ को रखे जाएं।

अय्यामे बीज़ के रोज़ों के मुतअ़ल्लिक़ 3 रिवायात

﴾1﴿ **उम्मुल** मुअमिनीन ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से रिवायत है, **अल्लाह** पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चार चीज़ें नहीं छोड़ते थे, आ़शूरा का रोज़ा और अ़शरए ज़ुल ह़िज्जा के रोज़े और हर महीने में तीन 3 दिन के रोज़े और फ़ज्र (के फ़र्ज़) से पहले दो 2 रक्अ़तें (या'नी दो सुन्नतें)। (نسائی، ص395، حدیث:2413) ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से "अ़शरए ज़ुल ह़िज्जा के रोज़े" से मुराद ज़ुल ह़िज्जा के इब्तिदाई नव दिनों के रोज़े हैं, वरना दस ज़ुल ह़िज्जा को रोज़ा रखना ह़राम है। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/195, माख़ूज़)

﴾2﴿ **ह़ज़रते** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से रिवायत है कि त़बीबों के त़बीब, **अल्लाह** के ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अय्यामे बीज़ में **बिग़ैर** रोज़ा के न होते न सफ़र में न ह़ज़र (या'नी क़ियाम) में। (نسائی، ص386، حدیث:2342)

﴾3﴿ **उम्मुल** मुअमिनीन ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا रिवायत फ़रमाती हैं : "अम्बिया के सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक महीने में **हफ़्ता, इतवार** और **पीर** का जब कि दूसरे माह **मंगल, बुध** और **जुम्आ़रात** का रोज़ा रखा करते।" (ترمذی، 2/186، حدیث:746)

अय्यामे बीज़ के रोज़ों के बारे में 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ "**जिस** त़रह़ तुम में से किसी के पास लड़ाई में बचाव के लिये ढाल होती है इसी त़रह़ रोज़ा जहन्नम से तुम्हारी ढाल है और **हर माह तीन दिन रोज़े** रखना बेहतरीन रोज़े हैं।" (ابن خزیمہ، 3/301، حدیث:2125) ﴾2﴿ हर महीने में **तीन दिन के रोज़े** ऐसे हैं जैसे दह्र (या'नी हमेशा) के रोज़े। (بخاری، 1/649، حدیث:1975) ﴾3﴿ **रमज़ान** के रोज़े और हर महीने में तीन दिन के रोज़े **सीने की ख़राबी** (या'नी जैसे निफ़ाक़) दूर करते हैं। (مسند امام احمد، 9/36، حدیث:23132) ﴾4﴿ **जिस** से हो सके हर महीने में **तीन रोज़े** रखे कि हर रोज़ा दस गुनाह मिटाता और गुनाह से ऐसा पाक कर देता है जैसा पानी कपड़े को। (معجم کبیر، 25/35، حدیث:60) ﴾5﴿ **जब** महीने में **तीन रोज़े** रखने हों तो 13, 14 और 15 को रखो।

(نسائی، ص396، حدیث:2417)

मरने की दुआएं मांगते थे

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अय्यामे बीज़ के रोज़ों, नेकियों और सुन्नतों का ज़ेह्न बनाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" का **दीनी माह़ोल** अपना लीजिये, सिर्फ़ दूर दूर से देखने से बात नहीं बनेगी, सुन्नतों भरे मदनी क़ाफ़िलों में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, **रमज़ानुल मुबारक** का **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** भी फ़रमाइये, اِنْ شَآءَاللّٰه वोह क़ल्बी सुकून मुयस्सर आएगा कि आप ह़ैरान रह जाएंगे। **दा'वते इस्लामी** के दीनी माह़ोल में आ कर कैसे कैसे बिगड़े हुए लोग राहे रास्त पर आ जाते हैं इस की एक झलक मुलाह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे एक नौ जवान इन्तिहाई फ़सादी और शरीर थे, लड़ाई

झगड़ा उन का पसन्दीदा मश्ग़ला था, उन की शर अंगेज़ियों से सारा महल्ला तंग था और घर वाले तो इस क़दर बेज़ार थे कि उन के मरने की दुआएं मांगते थे। ख़ुश क़िस्मती से कुछ इस्लामी भाइयों ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उन्हें रमज़ानुल मुबारक के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की दा'वत पेश की उन्हों ने मुरव्वत में हां कर दी। और रमज़ानुल मुबारक (1420 हि., 1999 ई.) में मेमन मस्जिद में आ़शिक़ाने रसूल के साथ मो'तकिफ़ हो गए। दौराने ए'तिकाफ़ उन्हें वुज़ू, ग़ुस्ल, नमाज़ का त़रीक़ा नीज़ हुक़ूक़ुल्लाह व हुक़ूक़ुल इ़बाद और एह़तिरामे मुस्लिम के अह़काम सीखने को मिले, सुन्नतों भरे पुरसोज़ बयानों और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं ने उन्हें हिला कर रख दिया! बसद नदामत उन्हों ने साबिक़ा गुनाहों से तौबा की, नेकियां करने की दिल में उमंग पैदा हुई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه उन्हों ने इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निशानी दाढ़ी शरीफ़ सजा ली, सर को सब्ज़ इमामा शरीफ़ के ताज से सर सब्ज़ किया और लड़ाई झगड़ों की जगह **नेकी की दा'वत** के शैदाई बन गए।

आओ आ कर गुनाहों से तौबा करो, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
रह़मते ह़क़ से दामन तुम आ कर भरो, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 640)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

"मुस्त़फ़ा" के पांच ह़ुरूफ़ की निस्बत से पीर शरीफ़ और जुमे'रात के रोज़ों के मुतअ़ल्लिक़ 5 रिवायात

﴿1﴾ **ह़ज़रते** अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : **पीर** और **जुमे'रात** को आ'माल पेश होते हैं तो मैं पसन्द करता हूं कि मेरा अ़मल उस वक़्त पेश हो कि मैं रोज़ादार होउं। (ترمذی، 2/187، حدیث:747)

ताकि रोज़े की बरकत से रह़मते इलाही का दरिया जोश मारे।

(मिरआत, 3/188)

﴾2﴿ **अल्लाह** पाक के मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पीर शरीफ़ और जुमे'रात को रोज़े रखा करते थे, इस के बारे में अ़र्ज़ की गई तो फ़रमाया : इन दोनों दिनों में **अल्लाह** पाक हर मुसल्मान की मग़्फ़िरत फ़रमाता है मगर वोह दो शख़्स जिन्हों ने बाहम (या'नी आपस में) जुदाई कर ली है उन की निस्बत मलाएका से फ़रमाता है इन्हें छोड़ दो यहां तक कि सुल्ह़ कर लें।

(ابن ماجہ، 2/344، حدیث:1740)

मशहूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त मिरआत जिल्द 3 सफ़ह़ा 196 पर फ़रमाते हैं : سُبْحٰنَ اللّٰه ! येह दोनों दिन बड़ी अ़ज़मत और बरकत वाले हैं क्यूं न हों कि इन्हें अ़ज़मत वालों से निस्बत है, ''जुमे'रात'' तो जुमुआ़ का पड़ोसी है और ह़ज़रते आमिना ख़ातून رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا के ह़ामिला होने का दिन है, और ''पीर'' हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत का दिन भी है और नुज़ूले क़ुरआने करीम का भी।

﴾3﴿ **उम्मुल** मुअमिनीन ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : नबियों के सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **पीर** और **जुमे'रात** के रोज़े का ख़ास ख़याल रखते थे। (ترمذی، 2/186، حدیث:745)

﴾4﴿ **ह़ज़रते** अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं, सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, रसूलों के सालार, नबियों के सरदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से **पीर शरीफ़** के रोज़े का सबब दरयाफ़्त किया गया तो फ़रमाया : इसी में **मेरी विलादत** हुई, इसी में मुझ पर वह़ी नाज़िल हुई। (مسلم، ص591، حدیث:198، 1162)

﴾5﴿ **हज़रते** उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के ग़ुलाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है : फ़रमाते हैं कि उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا सफ़र में भी **पीर** और **जुमे 'रात** का रोज़ा तर्क नहीं करते थे। मैं ने उन की बारगाह में अ़र्ज़ की : क्या वज्ह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ इस बड़ी उ़म्र में भी **पीर** और **जुमे 'रात** का रोज़ा रखते हैं ? फ़रमाया : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **पीर** और **जुमे 'रात** का रोज़ा रखा करते थे। मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या वज्ह है कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **पीर** और **जुमे 'रात** का रोज़ा रखते हैं ? तो इर्शाद फ़रमाया : लोगों के आ'माल **पीर** और **जुम्आ़रात** को पेश किये जाते हैं। (شعب الایمان، 3/392، حدیث:3859)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

"जन्नत" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से बुध और जुमे 'रात के रोज़ों के 3 फ़ज़ाइल

﴾1﴿ **हज़रते अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है **अल्लाह** पाक के प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बिशारत निशान है : जो **बुध** और **जुमे 'रात** के रोज़े रखे उस के लिये जहन्नम से आज़ादी लिख दी जाती है। (ابو یعلی، 5/115، حدیث:5610)

﴾2﴿ **हज़रते** मुस्लिम बिन **उ़बैदुल्लाह** क़रशी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अपने वालिदे मुकर्रम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में या तो ख़ुद अ़र्ज़ की या किसी और ने दरयाफ़्त किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं **हमेशा रोज़ा** रखूं ? सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहे, फिर दूसरी मर्तबा अ़र्ज़ की, फिर ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाई। तीसरी बार पूछने पर इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि **रोज़े** के

मुतअ़ल्लिक़ किस ने सुवाल किया ? अ़र्ज़ की, मैं ने **या नबिय्यल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! तो जवाबन इर्शाद फ़रमाया : बेशक तुझ पर तेरे घर वालों का ह़क़ है तू **रमज़ान** और इस से मुत्तसिल महीने (शव्वाल) और हर **बुध** और **जुमे'रात** के रोज़े रख कि अगर तू ऐसा करेगा तो **गोया तू ने हमेशा के रोज़े रखे** । (شعب الایمان، 3/395، حدیث:3868)

《3》 **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "जिस ने **रमज़ान, शव्वाल, बुध** और **जुमे'रात** का रोज़ा रखा तो वोह दाख़िले जन्नत होगा ।"

(سنن کبریٰ للنسائی، 2/147، حدیث:2778)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

"करम" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से बुध, जुम्अ़रात और जुमुआ़ के रोज़ों के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

《1》 **जिस** ने **बुध, जुमे'रात** व **जुमुआ़** का रोज़ा रखा **अल्लाह पाक** उस के लिये **जन्नत** में एक मकान बनाएगा जिस का बाहर का ह़िस्सा अन्दर से दिखाई देगा और अन्दर का बाहर से । (معجم اوسط، 1/87، حدیث:253)

《2》 जिस ने बुध, जुमे'रात व जुमुआ़ का रोज़ा रखा **अल्लाह** पाक उस के लिये जन्नत में मोती और याक़ूत व ज़बरजद का मह़ल बनाएगा और उस के लिये दोज़ख़ से बराअत (या'नी आज़ादी) लिख दी जाएगी । (شعب الایمان، 3/397، حدیث:3873)

《3》 **जिस** ने **बुध, जुमे'रात** व **जुमुआ़** का रोज़ा रखा फिर जुमुआ़ को थोड़ा या ज़ियादा तसद्दुक़ (या'नी ख़ैरात) करे तो जो गुनाह किये हैं बख़्श दिये जाएंगे और ऐसा हो जाएगा जैसे उस दिन कि अपनी मां के पेट से पैदा हुवा था ।

(شعب الایمان، 3/397، حدیث:3872)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

''जुमुआ'' के चार हुरूफ़ की निस्बत से जुमुआ के रोज़े के मुतअ़ल्लिक़ 4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴿1﴾ ''**जिस** ने **जुमुआ** का रोज़ा रखा तो **अल्लाह** पाक उसे आख़िरत के दस दिनों के बराबर अज्र अ़त़ा फ़रमाएगा और वोह अय्याम (अपनी मिक़्दार में) अय्यामे दुन्या की त़रह़ नहीं है।'' (شعب الایمان، 3/393، حدیث:3862)

फ़तावा रज़विय्या जिल्द 10 सफ़ह़ा 653 पर है : रोज़ए जुमुआ या'नी जब इस के साथ पन्ज शम्बा या शम्बा (या'नी जुमे'रात या हफ़्ते का रोज़ा) भी शामिल हो मरवी हुवा कि दस हज़ार बरस के रोज़ों के बराबर है।

﴿2﴾ ''**जिस** ने **जुमुआ** अदा किया और इस दिन का **रोज़ा** रखा और मरीज़ की **इयादत** की और **जनाज़े** के साथ गया और निकाह़ में ह़ाज़िर हुवा तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो गई।'' (معجم کبیر، 8/97، حدیث:7484)

﴿3﴾ ''**जिस** ने रोज़े की ह़ालत में यौमे **जुमुआ** की सुब्ह़ की और मरीज़ की **इयादत** की और **जनाज़े** के साथ गया और **सदक़ा** किया तो उस ने अपने लिये **जन्नत** वाजिब कर ली।'' (شعب الایمان، 3/393، حدیث:3864)

﴿4﴾ **जिस** ने बरोज़े **जुमुआ** रोज़ा रखा और मरीज़ की **इयादत** की और **मिस्कीन** को खाना खिलाया और **जनाज़े** के हमराह चला तो उसे **चालीस साल** के गुनाह लाह़िक़ न होंगे। (شعب الایمان، 3/394، حدیث:3865) ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से ''उसे चालीस साल के गुनाह लाह़िक़ न होंगे'' से मुराद या तो उसे नेकी ही की तौफ़ीक़ मिलेगी या गुनाह सादिर हुए तो ऐसी तौबा की तौफ़ीक़ मिल जाएगी जो उस के गुनाहों को मिटा देगी।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बहुत कम **जुमुआ** का रोज़ा तर्क फ़रमाते थे। (شعب الایمان، 3/394، حدیث:3865)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ आ़शूरा के रोज़े के पहले या बा'द में एक रोज़ा रखना है इसी त़रह़ **जुमुआ़** में भी करना है, क्यूं कि ख़ुसूसिय्यत के साथ तन्हा **जुमुआ़** (इस मस्अले का ख़ुलासा आगे आ रहा है) या सिर्फ़ **हफ़्ते** का रोज़ा रखना मक्रूहे तन्ज़ीही (या'नी ना पसन्दीदा) है। हां अगर किसी मख़्सूस तारीख़ को **जुमुआ़** या हफ़्ता आ गया तो तन्हा **जुमुआ़** या हफ़्ते का रोज़ा रखने में कराहत नहीं। मसलन 15 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म, 27 रजबुल मुरज्जब वग़ैरा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

"फ़ज़्ल" के तीन ह़ुरूफ़ की निस्बत से तन्हा जुमुआ़ का रोज़ा रखने की मुमानअ़त पर 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ शबे **जुमुआ़** को दीगर रातों में शब बेदारी के लिये ख़ास न करो और न ही **यौमे जुमुआ़** को दीगर दिनों में रोज़े के साथ ख़ास करो मगर येह कि तुम ऐसे रोज़े में हो जो तुम्हें रखना हो। (مسلم، ص576، حدیث:1144)

मशहूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه मिरआत जिल्द 3 सफ़ह़ा 187 पर "शबे जुमुआ़ को दीगर रातों में शब बेदारी के लिये ख़ास न करो।" के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी जुमुआ़ की रात में इ़बादत करना मन्अ़ नहीं, बल्कि और रातों में बिल्कुल इ़बादत न करना मुनासिब नहीं कि येह ग़फ़्लत की दलील है चूंकि जुमुआ़ की रात ही ज़ियादा अ़ज़मत वाली है, अन्देशा था कि लोग इस को नफ़्ली इ़बादतों से ख़ास कर लेंगे इस लिये इसी रात का नाम लिया गया।

﴾2﴿ **तुम** में से कोई हरगिज़ **जुमुआ़** का रोज़ा न रखे मगर येह कि इस के पहले या बा'द में एक दिन मिला ले। (بخاری، 1/653، حدیث:1985)

﴾3﴿ **जुमुआ़** का दिन तुम्हारे लिये **ईद** है इस दिन रोज़ा मत रखो मगर येह कि इस से पहले या बा'द में भी रोज़ा रखो। (الترغیب والترہیب، 2/81، حدیث:11)

अह़ादीसे मुबारका से मा'लूम हुवा कि तन्हा **जुमुआ़** का रोज़ा न रखना चाहिये मगर येह मुमानअ़त सिर्फ़ उसी सूरत में है जब कि ख़ुसूसिय्यत के साथ जुमुआ़ ही का रोज़ा रखा जाए अगर ख़ुसूसिय्यत न हो मसलन जुमुआ़ के रोज़ छुट्टी थी इस से फ़ाएदा उठाते हुए रोज़ा रख लिया तो कराहत नहीं।

मशहूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मिरआत जिल्द 3 सफ़ह़ा 187 पर फ़रमाते हैं : मसलन कोई शख़्स हर ग्यारहवीं या बारहवीं तारीख़ को रोज़ा रखने का आ़दी हो और इत्तिफ़ाक़ से उस दिन जुमुआ़ आ जाए तो रख ले, अब ख़िलाफ़े औला भी नहीं।

रोज़ए जुमुआ़ के मुतअ़ल्लिक़ एक फ़तवा

इस ज़िम्न में **फ़तावा रज़विय्या** (मुख़र्रजा) जिल्द 10 सफ़ह़ा 559 से मा'लूमाती सुवाल जवाब मुलाह़ज़ा हों : **सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन इस मस्अले में कि **जुमुआ़** का रोज़ए नफ़्ल रखना कैसा है ? एक शख़्स ने जुमुआ़ का रोज़ा रखा दूसरे ने उस से कहा जुमुआ़ ईदुल मुअमिनीन है, रोज़ा रखना इस दिन में मक्रूह है और ब इसरार बा'द दो पहर के रोज़ा तुड़वा दिया और किताब "सिर्रुल क़ुलूब" में मक्रूह होना लिखा है दिखला दिया। ऐसी सूरत में रोज़ा तोड़ने वाले के ज़िम्मे कफ़्फ़ारा है या नहीं ? और तुड़वाने वाले को कोई इल्ज़ाम है या नहीं ? **अल जवाब :** जुमुआ़ का रोज़ा ख़ास इस निय्यत से (रखना) कि आज जुमुआ़ है इस का

रोज़ा बित्तख़्सीस (या'नी ख़ुसूसिय्यत से रखना) चाहिये, मक्रूह है, मगर न वोह कराहत कि तोड़ना लाज़िम हुवा, और अगर ख़ास ब निय्यते तख़्सीस न थी तो अस्लन कराहत भी नहीं, उस दूसरे शख़्स को अगर निय्यते मक्रूहा पर इत्तिलाअ़ न थी जब तो ए'तिराज़ ही सिरे से ह़माक़त हुवा और रोज़ा तुड़वा देना शर्अ़ पर सख़्त जुर्अत, और अगर इत्तिलाअ़ भी हुई जब भी मस्अला बता देना काफ़ी था न कि रोज़ा तुड़वाना और वोह भी बा'द दो पहर के, जिस का इख़्तियार नफ़्ल रोज़े में वालिदैन के सिवा किसी को नहीं, तोड़ने वाला और तुड़वाने वाला दोनों गुनहगार हुए, तोड़ने वाले पर क़ज़ा लाज़िम है कफ़्फ़ारा अस्लन (या'नी बिल्कुल) नहीं। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

हफ़्ता और इतवार के रोज़े

ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से मरवी है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **हफ़्ते और इतवार** का रोज़ा रखा करते और फ़रमाते : "येह दोनों (या'नी हफ़्ता और इतवार) मुश्रिकीन की ईद के दिन हैं और मैं चाहता हूं कि इन की मुख़ालफ़त करूं।" (ابن خزیمہ، 3/318، حدیث:2176)

तन्हा हफ़्ते का रोज़ा रखना मन्अ़ है। चुनान्चे ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन बुस्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अपनी बहन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से रिवायत करते हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हफ़्ते के दिन का रोज़ा फ़र्ज़ रोज़ों के इलावा मत रखो।" ह़ज़रते इमाम अबू ईसा **तिरमिज़ी** رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि येह ह़दीस ह़सन है और यहां मुमानअ़त से मुराद किसी शख़्स का हफ़्ते के रोज़े को ख़ास कर लेना है कि यहूदी इस दिन की ता'ज़ीम करते हैं। (ترمذی، 2/186، حدیث:744)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

"ऐ शहन्शाहे मदीना" के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से रोज़ए नफ़्ल के 13 मदनी फूल

﴾1﴿ **मां** बाप अगर बेटे को **नफ़्ल रोज़े** से इस लिये मन्अ़ करें कि बीमारी का अन्देशा है तो वालिदैन की इताअ़त करे। (ردالمحتار، 3/478) ﴾2﴿ **शौहर** की इजाज़त के बिग़ैर बीवी **नफ़्ल रोज़ा** नहीं रख सकती। (درمختار، 3/477) ﴾3﴿ **नफ़्ल रोज़ा** क़स्दन शुरूअ़ करने से पूरा करना वाजिब हो जाता है अगर तोड़ेगा तो क़ज़ा वाजिब होगी। (درمختار، 3/477) ﴾4﴿ **नफ़्ल रोज़ा** जान बूझ कर नहीं तोड़ा बल्कि बिला इख़्तियार टूट गया मसलन औ़रत को रोज़े के दौरान हैज़ आ गया तो रोज़ा टूट गया मगर क़ज़ा वाजिब है। (درمختار، 3/474) ﴾5﴿ **नफ़्ल रोज़ा** बिला उ़ज़्र तोड़ना, **ना जाइज़** है। मेहमान के साथ अगर मेज़बान न खाएगा तो उसे या'नी मेहमान को ना गवार गुज़रेगा। या **मेहमान** अगर खाना न खाए तो **मेज़बान** को अज़िय्यत होगी तो **नफ़्ल रोज़ा** तोड़ने के लिये येह उ़ज़्र है बशर्ते कि येह भरोसा हो कि इस की क़ज़ा रख लेगा और येह भी शर्त है कि ज़ह्वए कुब्रा से पहले तोड़े बा'द को नहीं। (درمختار، ردالمحتار، 3/475، 456) ﴾6﴿ **वालिदैन** की नाराज़ी के सबब अ़स्र से पहले तक **नफ़्ल रोज़ा** तोड़ सकता है बा'दे अ़स्र नहीं। (درمختار، ردالمحتار، 3/477) ﴾7﴿ **अगर** किसी इस्लामी भाई ने दा'वत की तो ज़ह्वए कुब्रा से क़ब्ल **नफ़्ल रोज़ा** तोड़ सकता है मगर क़ज़ा वाजिब है। (درمختار، 3/473، 477) ﴾8﴿ **इस** त़रह़ निय्यत की, कि "कहीं दा'वत हुई तो रोज़ा नहीं और न हुई तो है।" येह निय्यत सह़ीह़ नहीं, बहर ह़ाल रोज़ादार नहीं। (عالمگیری، 1/195) ﴾9﴿ **मुलाज़िम** या मज़दूर अगर **नफ़्ल रोज़ा** रखें तो काम पूरा नहीं कर सकते तो "मुस्ताजिर" (या'नी जिस ने मुलाज़मत या मज़दूरी पर रखा है) की इजाज़त ज़रूरी है। और अगर काम पूरा कर सकते हैं तो इजाज़त की ज़रूरत

नहीं ।[1] (درمختار،3/478) ❀10❀ त़ालिबे इ़ल्मे दीन अगर नफ़्ल रोज़ा रखता है तो कमज़ोरी होती, नींद चढ़ती और सुस्ती के सबब त़लबे इ़ल्मे दीन में रुकावट खड़ी होती है तो अफ़्ज़ल येह है नफ़्ल रोज़ा न रखे। ❀11❀ ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام एक दिन छोड़ कर एक दिन रोज़ा रखते थे। इस त़रह़ रोज़े रखना "सौमे दावूदी" कहलाता है और हमारे लिये येह अफ़्ज़ल है। जैसा कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अफ़्ज़ल रोज़ा मेरे भाई **दावूद** (عَلَيْهِ السَّلَام) का रोज़ा है कि वोह एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन न रखते और दुश्मन के मुक़ाबले से फ़िरार न होते थे।" (ترمذی،2/197،حدیث:770) ❀12❀ ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام तीन दिन महीने के शुरूअ़ में, तीन दिन वस्त़ (या'नी बीच) में और तीन दिन आख़िर में रोज़ा रखा करते थे और इस त़रह़ महीने के अवाइल, अवासित़ और अवाख़िर में रोज़ादार रहते थे। (ابن عساکر،24/48) ❀13❀ सौमे दह्र (या'नी हमेशा रोज़े रखना सिवा इन पांच दिनों या'नी शव्वाल की यकुम और ज़िल ह़िज्जा की दसवीं ता तेरहवीं के जिन में रोज़ा रखना ह़राम है) मक्रूहे तन्ज़ीही है। (درمختار،3/391)

हमेशा रोज़ा रखना

हमेशा के रोज़ों से मुमानअ़त पर "बुख़ारी शरीफ़" की येह ह़दीस भी है और इस का मफ़्हूम भी उ़लमा ने तावील के साथ बयान फ़रमाया है चुनान्चे फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : لَاصَامَ مَنْ صَامَ الدَّهْرَ या'नी जो हमेशा रोज़े रखे उस ने रोज़े रखे ही नहीं। (بخاری،1/651،حدیث:9179)

शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : अगर इस ख़बर को "नही"

1... मुलाज़मत के मुतअ़ल्लिक़ बेहतरीन मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना का शाएअ़ कर्दा सिर्फ़ 22 सफ़ह़ात का रिसाला "ह़लाल त़रीक़े से कमाने के 50 मदनी फूल" का ज़रूर मुत़ालआ़ फ़रमाइये।

के मा'ना में मानें (या'नी अगर इस ह़दीस का येह मा'ना लें कि हमेशा रोज़े रखना मन्अ़ है और जो रखेगा तो उसे कोई सवाब नहीं मिलेगा) तो (इस सूरत में ह़दीस का) येह इर्शाद उन लोगों के लिये है जिन्हें मुसल्सल रोज़ा रखने की वज्ह से इस का ज़न्ने ग़ालिब हो कि इतने कमज़ोर हो जाएंगे कि जो हुक़ूक़ इन पर वाजिब हैं उन को अदा नहीं कर पाएंगे ख़्वाह वोह हुक़ूक़ दीनी हों या दुन्यवी, मसलन नमाज़, बच्चों की परवरिश के लिये कमाई, और (पहली सूरत से हट कर दूसरी सूरत येह बनती है कि) अगर मुसल्सल रोज़ा रखने की वज्ह से (अगर) इन (रोज़ादारों) का ज़न्ने ग़ालिब हो कि हुक़ूक़े वाजिबा तो कमा ह़क़्क़ुहू (या'नी मुकम्मल तौ़र पर) अदा कर लेंगे मगर हुक़ूक़े ग़ैरे वाजिबा अदा करने की क़ुव्वत नहीं रहेगी, उन के लिये रोज़ा मक्रूह या ख़िलाफ़े औला है और जिन्हें इस का ज़न्ने ग़ालिब हो कि सौमे दह्र (या'नी हमेशा रोज़ा) रखने के बा वुजूद तमाम हुक़ूक़े वाजिबा, मस्नूना, मुस्तह़ब्बा कमा ह़क़्क़ुहू (या'नी मुकम्मल तौ़र पर) अदा कर लेंगे उन के लिये कराहत भी नहीं। बा'ज़ सह़ाबए किराम जैसे अबू त़ल्ह़ा अन्सारी और ह़म्ज़ा बिन अम्र अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا सौमे दह्र (या'नी हमेशा रोज़ा) रखते थे और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें मन्अ़ नहीं फ़रमाया, इसी त़रह़ बहुत से ताबिईन और औलियाए किराम से भी सौमे दह्र (या'नी हमेशा रोज़ा) रखना मन्क़ूल है। (اشعۃ اللمعات، 2/100) (नुज़्हतुल क़ारी, 3/386 मुलख़्ख़सन)

या रब्बे मुस्त़फ़ा ! हमें ज़िन्दगी, सिह़्ह़त और फ़ुरसत को ग़नीमत जानते हुए ख़ूब ख़ूब नफ़्ल रोज़े रखने की सआ़दत इनायत फ़रमा, उन्हें क़बूल भी कर, हमें बे ह़िसाब बख़्श दे और हमारे प्यारे प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

अगले हफ़्ते का रिसाला